

विश्व जल दिवस-2022 का आयोजन हाइब्रिड मोड पर किया गया

कानपुर (नगर छाया समाचार)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में आज भूजल-अदृश्य को दृश्य बनाना विषय पर विश्व जल दिवस-2022 का आयोजन हाइब्रिड मोड पर किया गया। इसमें बड़ी संख्या में चीनी उत्पादक राज्यों से चीनी और इथेनॉल उद्योग के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में, निदेशक श्री नरेंद्र मोहन ने चीनी कारखानों में प्रसंस्करण के लिए ताजे पानी के उपयोग को कम करने की आवश्यकता पर जोर दिया क्योंकि गन्ने में ही लगभग 70 लीटर पानी होता है, जिसका पुनः उपयोग करके प्राकृतिक संसाधनों से जल दोहन को कम किया जा सकता है। संस्थान ने पहले ही इस कार्य को अपने हाथ में ले लिया है और विकसित नवीन कन्डेनसेट और जल प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से, ताजे पानी की आवश्यकताओं में भारी कमी आई है, उन्होंने कहा।

पिछले पांच वर्षों के दौरान, गंगा बेसिन में स्थित चीनी कारखानों में ताजे पानी की खपत 140-180 लीटर प्रति टन गन्ने से घटकर 80-100 लीटर प्रति टन गन्ना हो गई है। उन्होंने कहा कि देश में प्रति वर्ष 30 करोड़ मीट्रिक टन गन्ने की पैराई को ध्यान में रखते हुए, ऐसी प्रणाली को अपनाने से पानी की महत्वपूर्ण बचत हो सकती है। इसी तरह, डिस्टिलरी में ताजे पानी की खपत 12-14 लीटर/लीटर अल्कोहल से घटाकर 6-7 लीटर/लीटर अल्कोहल हो गई है और इसमें और कमी की गुंजाइश है।



श्री डॉक्टर स्वेन, आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी ने पानी की आवश्यकताओं को और कम करने के लिए एयर कूल्ड कंडेनसर और कंडेनसेट पॉलिशिंग जैसी इकाइयों की विभिन्न तकनीकों के बारे में विस्तार से बताया। अब विकसित कामप्लेक्सों में चीनी, बिजली उत्पादन और इथेनॉल इकाइयां शामिल हैं अतः इस बदले परिदृश्य में समग्र जल आवश्यकताओं के लिए रणनीति तैयार करना आवश्यक है। उचित उपचार के बाद चीनी इकाइयों से निकलने वाले अपशिष्ट का उपयोग शीरा आधारित डिस्टिलरियों और बिजली उत्पादन इकाइयों में कर उनकी पानी की आवश्यकताओं को कम किया जा सकता है।

श्री प्रदीप खंडेलवाल, यूनिट हेड, मेसर्स त्रिवेणी इंजीनियरिंग एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने खेत से कारखाने तक पानी की आवश्यकताओं को कम करने के लिए उचित तकनीक अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। गन्ने को पानी की खपत वाली फसल माना जाता है और अंतः सिंचाई की आधुनिक तकनीकों, कुंड सिंचाई और ड्रिप सिंचाई को बड़े पैमाने पर बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

मेसर्स यू.वाई. ट्राइएनविरो प्राइवेट लिमिटेड ने भाप उत्पादन में इसके पुनः उपयोग के लिए मेम्ब्रेन टेक्नोलॉजी आधारित कन्डेनसेट शुद्धिकरण प्रणाली के बारे में भी प्रस्तुति दी ताकि ताजे पानी की खपत को कम किया जा सके।

मेसर्स यू.वाई. ट्राइएनविरो प्राइवेट लिमिटेड ने भाप उत्पादन में इसके पुनः उपयोग के लिए मेम्ब्रेन टेक्नोलॉजी आधारित कन्डेनसेट शुद्धिकरण प्रणाली के बारे में भी प्रस्तुति दी ताकि ताजे पानी की खपत को कम किया जा सके।

गन्ने में 70 फीसदी पानी, कम करें प्राकृतिक संसाधनों का जल दोहन

एनएसआई ने विकसित की नवीन कन्डेनसेट, जल प्रबंधन प्रणाली से ताजी पानी की आवश्यकता में भारी कमी

कानपुर, 22 मार्च। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में आज भूजल-अदृश्य को दृश्य बनाना विषय पर विश्व जल दिवस 2022 का आयोजन हाइब्रिड मोड पर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने चीनी कारखानों में प्रसंस्करण के लिए ताजे पानी के उपयोग को कम करने की आवश्यकता पर जोर दिया। क्योंकि गन्ने में ही लगभग 70 फीसदी पानी होता है। जिसका पुनः उपयोग करके प्राकृतिक संसाधनों से जल दोहन को कम किया जा सकता है। संस्थान की ओर से विकसित नवीन कन्डेनसेट और जल प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से ताजे पानी की आवश्यकता में भारी कमी आई है। उन्होंने कहा कि पिछले पांच वर्षों के दौरान गंगा बेसिन में स्थित चीनी कारखानों में ताजे पानी की खपत 140-180 लीटर प्रति टन गन्ने से घटकर 80-100 लीटर प्रति टन गन्ना हो गई है। उन्होंने कि देश में प्रति वर्ष 30 करोड़ मीट्रिक टन गन्ने की पैराई को ध्यान में रखते हुए ऐसी प्रणाली को अपनाने से पानी की महत्वपूर्ण बचत हो सकती है। इसी तरह डिस्टिलरी में ताजे पानी की खपत 12 से 14 लीटर प्रति लीटर अल्कोहल से घटाकर 6-7 लीटर प्रति लीटर अल्कोहल हो गई है और इसमें और कमी की गुंजाइश है। डा. स्वेन ने पानी की



कार्यक्रम को सम्बोधित करते निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन।

आवश्यकताओं को और कम करने के लिए एयर कूल्ड कंडेनसर और कंडेनसेट पॉलिशिंग जैसी इकाइयों की विभिन्न तकनीकियों पर प्रकाश डाला। मेसर्स त्रिवेणी इंजी. लि. के यूनिट हेड प्रदीप खंडेलवाल ने खेत से कारखाने तक पानी की आवश्यकताओं को कम करने के लिए उचित तकनीक अपनाने की आवश्यकता है। गन्ने को पानी की खपत वाली फसल माना जाता है और अंत आधुनिक तकनीकों कुंड सिंचाई और ड्रिप सिंचाई को बड़े पैमाने पर बढ़ावा देने की आवश्यकता है। मेसर्स यू.वाई. ट्राइएनविरो प्रा. लि. ने भाप उत्पादन में इनके पुनः उपयोग के लिए मेम्ब्रेन टेक्नोलॉजी आधारित कन्डेनसेट शुद्धिकरण प्रणाली के बारे में भी प्रस्तुति दी ताकि ताजे पानी की खपत को कम किया जा सके।

'30% of fresh water on Earth is groundwater'

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

Director of National Sugar Institute, Prof Narendra Mohan, while delivering his presidential address at the institute on World Water Day on Tuesday said this year the theme was 'Groundwater-Making the Invisible, Visible'. The session was organised in a hybrid mode. He said during the last five years fresh water consumption in the sugar factories situated in Ganga basin had come down from 140-180 litre per tonne of cane processed to 80-100 litre per tonne of cane. He said keeping in view sugarcane crushing to the extent of 300 million metric tonnes per annum in the country, adoption of such system can provide significant savings.

He said fresh water consumption in distilleries had also been reduced from 12-14 litres of alcohol to 6-7 litres of alcohol and there was scope for further reduction.

He said the focus of sugar units need to reduce the water wastage and this was the objective of holding a session on World Groundwater Day. He said water was one of the world's most precious resources and people use water every day for many activities. He said although water played an essential role in everyday life, many people did not realise that much of their water came from the ground.

Prof Mohan said groundwater was water found below



Director NSI, Prof Narendra Mohan addressing a session on "Groundwater Day" at the Institute on Tuesday.

the earth's surface in spaces between rock and soil. He said surface water was water that collected above the earth's surface, such as streams, rivers, lakes or oceans. He said 30 per cent of all the fresh water on Earth was groundwater, while the other 70 per cent was surface water.

He said groundwater supplied water to wells and springs and was an important source of water for public water systems and private wells. He said thus every care need to be made to prevent contamination (germs and harmful chemicals). He said protecting the safety of groundwater was an impor-

tant priority for country like India.

D Swain, Prof Sugar Engineering detailed about various technologies viz air cooled condensers and condensate polishing units to reduce water requirements further.

Now we are having complexes comprising sugar, power generation and ethanol units and thus it is necessary to draw strategy for overall water requirements.

The effluent from sugar units after due treatment can be utilised in molasses based distilleries and power generation units, thus minimising their requirements.

Pradeep Khandelwal, Unit Head,

Triveni Engineering & Industries Ltd, stressed upon need for taking appropriate measures to reduce water requirements from 'Farm to Factory'. Sugarcane is considered to be a water guzzler crop and thus modern techniques of irrigation, furrow irrigation and drip irrigation are required to be promoted in a bigger way.

M/s UY Trienviro Pvt Ltd also made presentation about membrane technology based condensate purification system for its reuse in steam generation so as to reduce fresh water intake.

'World Water Day' observed at National Sugar Institute

TIMES NEWS NETWORK

Kanpur: 'World Water Day' was observed at National Sugar Institute here on Tuesday. The event whose theme was 'Groundwater-Making the invisible, visible', was held in the hybrid mode. It was attended by a large number of delegates from the sugar and ethanol industry from various sugar producing states of the country.

Director of the institute Narendra Mohan in his presidential address stressed upon the need for minimizing fresh water usage for processing in sugar factories as sugarcane itself contains about 70% water which can be recovered and re-utilized for meeting process needs instead of exhausting natural resources. During the last five years, fresh water consumption in the sugar factories situated in the Ganga basin has come down from 140-180 litres per tonne of cane proc-

essed to 80-100 litres per tonne of cane. Keeping in view sugarcane crushing to the extent of 300 million metric tonnes per annum in the country, adoption of such a system can provide significant savings, Prof Mohan said. Similarly, fresh water consumption in distilleries has been reduced from 12-14 litres of alcohol to 6-7 litres of alcohol and there is scope for further reduction, he added. Prof. D Swain in his address talked about various technologies-air cooled condensers and condensate polishing units to reduce water requirements further. "Now, we are having complexes comprising sugar, power generation and ethanol units and thus it is necessary to draw a strategy for overall water requirements. The effluent from sugar units after due treatment can be utilized in molasses-based distilleries and power generation units, thus minimizing their requirements", Prof Swain explained.

नदियों के जीर्णोद्धार के लिए हों वैश्विक प्रयास

■ सहारा न्यूज ब्यूरो
कानपुर।

विश्व जल दिवस' विभिन्न कॉलेजों सहित पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सक्रिय संगठनों ने मंगलवार को जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर जल संरक्षण के महत्त्व पर चर्चा की व सभी को इसके लिए प्रेरित किया। आईआईटी कानपुर के



आईआईटी कानपुर के प्रो. विनोद कुमार

विश्व जल दिवस' कार्यक्रम में विभिन्न देशों द्वारा 'नदियों जीर्णोद्धार तकनीक' पर संयुक्त रूप से कार्य करने पर जोर दिया।

चीनी मिलों में की जा सकती है जल की भाटी बचत : राष्ट्रीय

'विश्व जल दिवस' पर मंथन का विषय रहा जल संरक्षण व जल प्रदूषण

जीवनदायी जल संरक्षण को सुरक्षित रखने का करना होगा हर एक को उपाय

शर्करा संस्थान ने इस अवसर पर कार्यक्रम आयोजित कर 'भूजल-अदृश्य को दृश्य बनाना' विषय पर चीनी और इथेनॉल उद्योग के प्रतिनिधियों के साथ विचार मंथन किया।



शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन।

आवश्यकता पर जोर दिया। उनके मुताबिक गन्ने में 70 प्रतिशत पानी होता है, जिसका पुनः उपयोग करके प्राकृतिक संसाधनों से जल दोहन को कम किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि संस्थान द्वारा

विकसित 'नवीन कन्डेनसेट और जल प्रबंधन प्रणाली' के माध्यम से चीनी मिलों में ताजे पानी की आवश्यकताओं में भारी कमी आई है। उन्होंने कहा कि देश में प्रति वर्ष 30 करोड़ मीट्रिक टन गन्ने की पैदाई को ध्यान में रखते हुए ऐसी प्रणाली अपनाने से पानी की महत्वपूर्ण बचत हो सकती है।

संस्थान के आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी डॉ.स्वेन ने कहा कि समग्र जल आवश्यकताओं के लिए रणनीति तय करना आवश्यक है। मे. त्रिवेणी इंजीनियरिंग एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड के यूनिट हेड प्रदीप खंडेलवाल ने 'खेत से कारखाने तक' पानी की आवश्यकताओं को कम करने के लिए उचित तकनीक को बढ़ावा दिये जाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि गन्ने की खेती के लिए 'कुंड सिंचाई' व 'ड्रिप सिंचाई' प्रणाली को बढ़ावा देने की बात कही। मेसर्स यूवाई

ट्राइप्रोटेक्नोलॉजी प्रा.लि. ने ताजे पानी के खपत को कम करने के लिए भाप उत्पादन में इसके पुनः उपयोग के लिए मेम्ब्रेन टेक्नोलॉजी आधारित कन्डेनसेट शुद्धीकरण प्रणाली के बारे में प्रस्तुति दी।

एचबीटीयू प्रोफेसर ने भूजल प्रदूषण पर जताई चिंता :

इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स इंडिया के कानपुर लोकल सेंटर ने भी 'विश्व जल दिवस' पर कार्यक्रम कर भविष्य की रणनीति पर चर्चा की। इस वर्ष इस दिवस



एचबीटीयू के प्रो. राजीव गंगुली।

ने जल की महत्ता को इंगित करते हुए भूजल के प्रदूषित होने पर भी चिंता जताई व इसके लिए उपचार तकनीक पर काम किये जाने

पर जोर दिया। संस्था के चेयरमैन विवेक अस्थाना, मानद सचिव रामकान्त यादव सहित अन्य लोग कार्यक्रम में शामिल हुए।

जल बचत करने को हैं यह संकल्प :

पर्यावरण संरक्षण गतिविधि कानपुर प्रांत के सह संयोजक डॉ.गिरिजा लाल श्रीवास्तव ने ने कहा कि जल संरक्षण से ही हमारे जीवन का अस्तित्व है। उन्होंने कहा कि आज के दिन हम सब संकल्प लें कि हम जल संबंधित कार्य करते समय नल को आधा ही खोलेंगे, मकान व अन्य कार्यों में आवश्यकतानुसार ही जल उपयोग करेंगे, बगीचे में शाम को पानी देंगे, जिससे अधिक समय तक नमी बनी रहे, सार्वजनिक नल कहीं चलता दिखे तो उसे बंद कर देंगे, घर के सभी नलों में फ्रिजेट लगायेंगे, जिससे कम जल का उपयोग हो, बर्तन धोने में अनावश्यक ज्यादा पानी खर्च नहीं करेंगे, भोजन के समय आवश्यकतानुसार ही बर्तन का उपयोग करेंगे, घर के नलों को चेक करते रहेंगे व लीकेज को ठीक कराएंगे, पानी पीते समय बचे पानी को न फेंक कर जबरत के हिसाब से ही ग्लास में पानी लेंगे।

चिंतन

एनएसआई में हाइब्रिड मोड पर भूजल पर सेमिनार, इंस्टीट्यूट ने नई तकनीक से ताजे पानी की खपत घटाई

गन्ने के पानी के उपयोग से घटाएं भूजल की खपत



■ **ड्रिप और कुंड सिंचाई पर दिया जोर**

सेमिनार में विशेषज्ञों ने बताया कि उचित उपचार के बाद चीनी इकाइयों से निकलने वाले अपशिष्ट का उपयोग शीश आधारित डिस्टिलरी और बिजली उत्पादन इकाइयों में करके पानी की जरूरत को कम किया जा सकता है। गन्ने को पानी की खपत वाली फसल माना जाता है। यह खपत कम करने के लिए ड्रिप सिंचाई और कुंड सिंचाई का इस्तेमाल किया जा सकता है। कार्यक्रम में अन्य तकनीकों के संबंध में भी जानकारी दी गई।

■ **छात्राओं ने जल संरक्षण का लिया संकल्प**

कानपुर। किरदवर्नगर स्थित केके महाविद्यालय इंटर कॉलेज में एनसीसी की छात्राओं ने जल है तो कल है, जल ही जीवन है जैसे स्लोगनों के माध्यम से जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया। खुद जल संरक्षण का संकल्प लेते हुए लोगों से भी जल बचाने की अपील की। इस दौरान एनसीसी प्रभारी शैलजा रावत, दिव्या, आराध्या, लक्ष्मी, रानू, रिसिका आदि मौजूद रहीं। (संवाद)

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। विश्व जल दिवस पर नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में 'भूजल : अदृश्य को दृश्य बनाना' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें संस्थान के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि गन्ने में लगभग 70 फीसदी पानी होता है। इसका दोबारा इस्तेमाल कर

प्राकृतिक संसाधनों से जल दोहन को कम किया जा सकता है।

प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि इंस्टीट्यूट में विकसित नवीन संघनित (न्यू कंडेंसेट) और जल प्रबंधन प्रणाली के जरिये ताजे पानी की खपत में कमी आई है। पांच सालों में गंगा बेसिन में स्थित चीनी कारखानों में ताजे पानी की

खपत 140-180 लीटर प्रति टन गन्ने से घटकर 80-100 लीटर प्रति टन गन्ना हो गई है। इसी तरह डिस्टिलरी में ताजे पानी की खपत घटी है। सेमिनार का आयोजन हाइब्रिड मोड पर किया गया। इसमें लोगों ने ऑनलाइन और ऑफलाइन शिरकत की। विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों से चीनी और इथेनॉल उद्योग के प्रतिनिधियों

इसमें शामिल हुए। इस मौके पर कहा गया कि विभिन्न तकनीक अपनाकर गन्ने के पानी का दोबारा इस्तेमाल कर भूजल खपत कम की जा सकती है। पानी की जरूरत कम करने के लिए एयरकूल्ड कंडेंसर और कंडेंसेट पॉलिशिंग जैसी इकाइयों की विभिन्न तकनीकों के संबंध में जानकारी दी गई।